अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध महोत्सव

उपलब्धियाँ एवं संभावनाएँ

(24 अक्टूबर-8 नवम्बर98)

पर्यटन विभाग

उत्तर प्रदेश

प्रेरणा–स्रोत

श्री कल्याण सिंह
मा. मुख्य मंत्री, उ.प्र.

श्री कलराज मिश्र
मा. पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र.

श्री दलवीर सिंह
मा. पर्यटन राज्य मंत्री, उ.प्र.

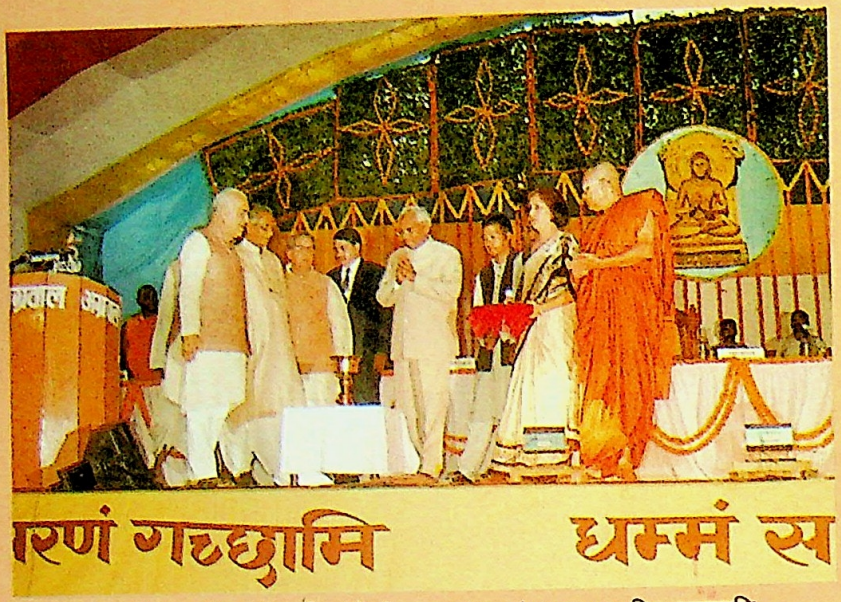

अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी, सारनाथ : मंचस्थ महामहिम राष्ट्रपति श्री के०आर० नारायणन, माननीय पर्यटन, संसदीय कार्य मंत्री, भारत सरकार श्री मदनलाल खुराना (तत्कालीन), माननीय मुख्य मंत्री, उ०प्र० श्री कल्याण सिंह, माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र० श्री कलराज मिश्र एवं अन्य विशिष्टजन।

- *आवरण पृष्ठ : धामेक स्तूप, सारनाथ।*

पृष्ठभूमि

उत्तर प्रदेश को भगवान बुद्ध जैसे युग–पुरुष की चरणरज से कृतार्थ होने का गौरव प्राप्त रहा है। भगवान बुद्ध ने मानवता और विश्व–बंधुत्व की भावना का जन–जन में संचरण करने के उद्देश्य से व्यापकरूप से देशाटन किया था। इस क्रम में उनके श्रीचरणों ने उत्तर प्रदेश स्थित कपिलवस्तु (पिपरहवा), सारनाथ, श्रावस्ती, कौशाम्बी, संकिसा एवं कुशीनगर जैसे स्थलों को भी महिमान्वित किया। फलतः ये स्थान राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय श्रद्धालु पर्यटकों के लिये पूजनीय और वन्दनीय बन गये। आज इन स्थानों पर न केवल भारत वरन् श्रीलंका, जापान, इण्डोनेशिया, थाईलैण्ड, म्यानमार, सिंगापुर, हांगकांग, कोरिया, चीन आदि देशों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पर्यटक श्रद्धा–सुमन अर्पित करने हेतु आते हैं।

इस प्रकार उत्तर प्रदेश को भगवान बुद्ध के महिमामण्डित जीवन–दर्शन से गहनरूप से जुड़े रहने का गौरव प्राप्त रहा है। इस तथ्य को दृष्टि में रखते हुए रहे उत्तर प्रदेश और बिहार में दिनांक **24 अक्टूबर, 1998 से 8 नवम्बर, 1998 तक** अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर **बौद्ध महोत्सव** का आयोजन कराया गया।

भारत सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा उत्तर प्रदेश एवं बिहार सरकारों के सहयोग से पहली बार वृहद और भव्य स्तर पर आयोजित कराये गए इस बौद्ध महोत्सव में उत्तर प्रदेश एवं बिहार के विभिन्न बौद्ध पर्यटक स्थलों पर सम्पन्न हुई संगोष्ठियाँ/सांस्कृतिक कार्यक्रम, बौद्ध परिक्रमा पर्यटक रेलगाड़ी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहे।

बौद्ध पर्यटक स्थलों एवं बौद्ध महोत्सव की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के महत्व को देखते हुए माननीय पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र. ने अपने गतिशील, प्रभावी और कुशल दिशा–निर्देशन में उत्तर प्रदेश में इस महोत्सव के अन्तर्गत वृहद्–स्तर पर विभिन्न आयोजन सम्पन्न कराने की रणनीति को विशेषरूप से स्वरूप प्रदान किया। यही कारण रहा कि यह बौद्ध महोत्सव विभिन्न उपलब्धियों की प्राप्तिकर सफल और स्मरणीय पर्यटन–गतिविधि के रूप में समादृत हुआ और इसके माध्यम से उत्तर प्रदेश के बौद्ध स्थलों का व्यापक प्रचार हुआ।

दिनांक 24 अक्टूबर, 1998 को राजगीर महोत्सव (बिहार) के उद्घाटन से प्रारम्भ हुए इस बौद्ध महोत्सव का **समापन दिनांक 8 नवम्बर, 1998 को बोधगया (बिहार)** में हुआ।

बौद्ध महोत्सव : उपलब्धियाँ

बौद्ध परिक्रमा पर्यटक रेलगाड़ी :

बौद्ध महोत्सव के अवसर पर दिनांक 23 अक्टूबर, 1998 को **'बौद्ध परिक्रमा पर्यटक रेलगाड़ी'** का शुभारम्भ एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही। हावड़ा (कलकत्ता) से चलकर गोरखपुर (कुशीनगर), वाराणसी (सारनाथ), राजगीर एवं बोधगया बौद्धस्थलों की परिक्रमा करती हुई पुनः हावड़ा पहुंची

"बौद्ध–परिक्रमा पर्यटक रेलगाड़ी" को गोरखपुर से प्रस्थान–संकेत दिखाकर रवाना करते हुए माननीय रेल मंत्री, भारत सरकार। साथ में हैं माननीय पर्यटन, संसदीय कार्यमंत्री, भारत सरकार (तत्कालीन), माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र. एवं माननीय पर्यटन राज्यमंत्री, उ.प्र.।

इस रेलगाड़ी में रेल विभाग एवं पर्यटन विभाग, भारत सरकार के संयुक्त प्रयासों से समस्त आवश्यक पर्यटकोचित सुविधाएँ सुलभ कराई गईं।

अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी

बौद्ध महोत्सव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आकर्षण रही **सारनाथ में आयोजित हुई अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी।** इसका उद्घाटन दिनांक 5 नवम्बर, 1998 को सारनाथ में महामहिम राष्ट्रपति महोदय द्वारा किया गया जबकि बौद्ध महोत्सव का समापन दिनांक 8 नवम्बर, 1998 को माननीय प्रधानमंत्री जी के द्वारा

सारनाथ में अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी के अवसर पर आगत विद्वत्जनों के साथ माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र.।

बोधगया (बिहार) में किया गया।

दिनांक 5–7 नवम्बर, 1998 को सारनाथ में 6 सत्रों में सम्पन्न हुई इस संगोष्ठी में महामहिम राष्ट्रपति श्री के०आर० नारायणन एवं महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री सूरज भान के अतिरिक्त माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार श्री लालकृष्ण आडवाणी, माननीय पर्यटन एवं संसदीय कार्यमंत्री, भारत सरकार (तत्कालीन) श्री मदनलाल खुराना, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार डॉ. मुरली मनोहर जोशी, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश श्री कल्याण सिंह, माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र. श्री कलराज मिश्र, माननीय पर्यटन राज्य मंत्री, भारत सरकार, माननीय पर्यटन मंत्री, बिहार सरकार के अतिरिक्त राष्ट्रीय–अंतर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त बौद्ध–दर्शन के अनेक विद्वानों ने अपने सारगर्भित विचार व्यक्त किये। उल्लेखनीय है कि संगोष्ठी के **प्रथम दिन 122 विद्वानों** तथा **द्वितीय दिन 150 विद्वानों** ने भाग लिया।

संगोष्ठी में सम्पन्न हुई 'त्रिरत्न एण्ड बुद्धिस्ट कान्सेप्ट आफ मैत्री एण्ड करुणा इन द कन्टेक्स्ट आफ वर्ल्ड पीस', 'बुद्धिज्म

सारनाथ में श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए महामहिम राष्ट्रपति महोदय, माननीय पर्यटन, संसदीय कार्यमंत्री, भारत सरकार (तत्कालीन), माननीय मुख्यमंत्री, उ.प्र. माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ.प्र. व अन्य गणमान्यजन।

इन ए कैटलिस्ट इन द फारमेशन आफ नेशनल कल्चर', 'बुद्धिस्ट पिलग्रिम्स स्कालर्स एण्ड बुद्धिस्ट एक्यूमेनिया', बुद्धिज्म एण्ड सोशल इन्टीग्रेशन इन डिफरेन्ट सोसाइटीज', 'कन्ट्रीब्यूशन आफ बुद्धिज्म इन द वर्ल्ड आफ आर्ट एण्ड आर्कीटेक्चर', बुद्धिज्म एण्ड फ्यूचर वर्ल्ड आर्डर' विषयक 6 संगोष्ठियों में विभिन्न स्थानों से पधारे बौद्ध भिक्षुओं, बौद्ध–दर्शन के विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों ने अपने उपयोगी और बहुमूल्य विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी के प्रथम दिन मूलगंध कुटीविहार (सारनाथ) में कोमलावर्धन तथा समापन दिवस 8 नवम्बर, 1998 को बोधगया (बिहार) में सुश्री स्वप्न सुन्दरी के मनमोहक नृत्य कार्यक्रम भी आकर्षण का केन्द्र रहे।

गंगा महोत्सव

पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रति वर्ष आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी **वाराणसी में पारम्परिक प्रबोधिनी एकादशी से पवित्र कार्तिक पूर्णिमा तक** आयोजित कराये जाने वाले दर्शनीय व लोकप्रिय **गंगा महोत्सव** का आयोजन बौद्ध महोत्सव के अन्तर्गत ही **31 अक्टूबर, 1998 से 4 नवम्बर, 1998 तक** कराया गया।

गंगा महोत्सव का उद्घाटन महामहिम राज्यपाल, उत्तर प्रदेश श्री सूरज भान के द्वारा किया गया। इस अवसर पर माननीय पर्यटन राज्य मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री दलवीर सिंह भी उपस्थित रहे। महोत्सव का समापन माननीय पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उत्तर प्रदेश श्री कलराज मिश्र ने किया। गंगा महोत्सव के अंतर्गत जहाँ देश के अनेक विख्यात कलाकारों द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, वहीं कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर गंगा के घाटों पर अपने ढंग की अनूठी **देव–दीपावली**, बेनियाबाग में **शिल्प मेला** तथा जोड़ी–मलखम्भ जैसे वाराणसी के पारम्परिक और दर्शनीय कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए।

गंगा महोत्सव, वाराणसी एवं अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी, सारनाथ की सफलता और लोकप्रियता की पुष्टि इस तथ्य से हो जाती है कि इन अवसरों पर (दिनांक 31 अक्टूबर, 98 से 8 नवम्बर, 98 के मध्य) लगभग **2000 विदेशी पर्यटकों का आगमन** हुआ जिसमें जर्मनी से 292, जापान से 205, आस्ट्रेलिया से 187, फ्रांस से 181, यू.एस.ए. से 158, यू.के. से 179, कनाडा से 141, इटली से 136, स्विटजरलैण्ड से 112, स्पेन से 63, बर्मा से 48 पर्यटक सम्मिलित रहे।

विभिन्न बौद्ध–स्थलों पर संपन्न हुए कार्यक्रम

बौद्ध महोत्सव के आयोजन से उत्तर प्रदेश के विभिन्न बौद्ध पर्यटक स्थलों को जोड़ने के उद्देश्य से सारनाथ के अतिरिक्त दिनांक 27–28,

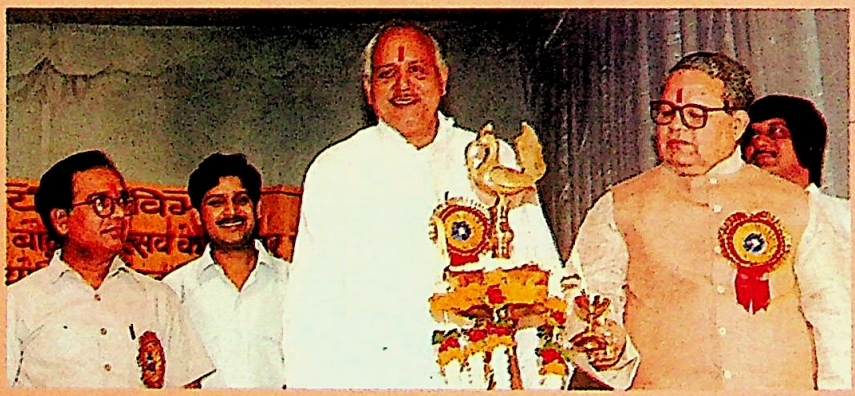

कुशीनगर में बौद्ध महोत्सव का शुभारम्भ करते हुए माननीय पर्यटन, लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र० श्री कलराज मिश्र। साथ में हैं माननीय आबकारी, मद्य निषेध मंत्री, उ०प्र० श्री सूर्यप्रताप साही।

कपिलवस्तु में बौद्ध महोत्सव : ध्यान–मग्न श्रद्धालुजन।

अक्टूबर, 1998 को कुशीनगर, दिनांक 29 अक्टूबर को कपिलवस्तु (पिपरहवा), श्रावस्ती, संकिसा तथा दिनांक 30 अक्टूबर को कौशाम्बी में बौद्ध महोत्सव के आयोजन भी सम्पन्न कराये गये जिनके अंतर्गत बौद्ध संगोष्ठियाँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए। इन आयोजनों में बौद्ध–दर्शन के विद्वत्जनों तथा स्थानीय जनता ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

वीजा–शुल्क में छूट

बौद्ध महोत्सव के महत्व को देखते हुए तथा इसमें विभिन्न देशों के बौद्ध भिक्षुओं को अधिकाधिक संख्या में भाग लेने के लिए प्रेरित करने क़े उद्देश्य से भारत सरकार के विदेश विभाग द्वारा बौद्ध महोत्सव–अवधि में वीजा शुल्क में प्रति भिक्षु 20 अमेरिकी डालर की छूट प्रदान की गई।

पर्यटक–सुविधाएँ

अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी के महत्व को दृष्टि में रखते हुए पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा पर्यटकों की सुविधार्थ विशेष व्यवस्थाएं करायी गयीं। इसके अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिचर्चा–संगोष्ठी, सारनाथ के आयोजन में अभ्यागत अतिथियों हेतु लगभग 5000 व्यक्तियों के बैठने की क्षमता वाले हैंगर

श्रावस्ती में बौद्ध महोत्सव।

स्ट्रक्चर का विशाल पंडाल निर्मित कराया गया। इसी प्रकार पर्यटकों को इस आयोजन हेतु सुचारु परिवहन–व्यवस्था उपलब्ध कराने के उद्देश्य से सारनाथ एवं वाराणसी के मध्य विभिन्न महत्वपूर्ण स्थलों और होटलों का स्पर्श करते हुए लगभग 50 बसों के माध्यम से परिवहन व्यवस्था भी सुलभ करायी गयी। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा वाराणसी एवं सारनाथ के पर्यटक स्थलों के भ्रमणार्थ गाइड सुविधायुक्त वातानुकूलित वाहन द्वारा संचालित–भ्रमण कार्यक्रम की भी व्यवस्था कराई गई। इसके अतिरिक्त पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा सारनाथ में पथ–प्रकाश तथा स्मारकों पर विशेषरूप से आलोक–व्यवस्था करायी गयी। पर्यटकों की सुविधार्थ पर्यटक आवास गृह, वाराणसी का नवीनीकरण/उच्चीकरण और वहाँ फैक्स सुविधा भी उपलब्ध करायी गयी।

एक पखवारे से भी अधिक समय तक चले इस बौद्ध महोत्सव की सफलता से प्रेरित होकर पर्यटन विभाग, भारत सरकार द्वारा इसका भविष्य में और व्यापक स्तर पर आयोजन कराने का निर्णय लिया गया है। इसके साथ ही पर्यटन विभाग, भारत सरकार तथा पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा सारनाथ, कुशीनगर तथा अन्य बौद्ध तीर्थ स्थलों का वृहद स्तर पर विकास और प्रचार–प्रसार कराने

बौद्ध महोत्सव के अन्तर्गत कौशाम्बी में आयोजित बौद्ध महोत्सव।

का भी निर्णय लिया गया है।

बौद्ध महोत्सव ने वस्तुतः विभिन्न देशों से विश्व–बन्धुत्व की भावना को और प्रगाढ़ता तो प्रदान की ही है, इसके माध्यम से उत्तर प्रदेश में स्थित सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकिसा, कपिलवस्तु और कौशाम्बी जैसे महिमामण्डित बौद्ध पर्यटक स्थलों को विश्व के पर्यटन मानचित्र पर और विशिष्टता भी प्राप्त हुई है।

संकिसा में आयोजित बौद्ध महोत्सव।

उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध स्थल

कपिलवस्तु (पिपरहवा)

गोरखपुर नगर से लगभग 100 किमी. दूर, कभी शाक्यवंश की राजधानी एवं भारत के प्राचीन गणराज्यों में से एक रहे इस स्थान पर भगवान बुद्ध का राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में बाल्यकाल व्यतीत हुआ था। उल्लेखनीय है कि विभिन्न उत्खननों के माध्यम से यह सिद्ध हो चुका है कि कपिलवस्तु उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जनपद के अंतर्गत आने वाले पिपरहवा ग्राम में ही स्थित था।

दर्शनीय स्थल : स्तूप, गनवरिया स्थित अवशेष, सालारगढ़ पुरातात्विक स्थल।

आवासीय सुविधा : राही मोटेल (उ०प्र०रा०प०वि०निगम)।

सारनाथ

वाराणसी से 10 किमी. की दूरी पर स्थित सारनाथ में भगवान बुद्ध ने ज्ञान–प्राप्ति के उपरान्त लगभग 2500 वर्षों पूर्व प्रथम धर्मोपदेश दिया था।

दर्शनीय स्थल : धामेक स्तूप, चौखण्डी स्तूप, मूलगंधकुटी विहार, अशोक स्तम्भ, संग्रहालय।

आवासीय सुविधा : होटल मृगदाव, सारनाथ (उ०प्र०रा०प०वि०निगम)।
दूरभाष : 386965
वाराणसी में विभिन्न स्तर के होटल उपलब्ध हैं।

श्रावस्ती

यहाँ भगवान बुद्ध ने जेतवन में 24 वर्षाकाल व्यतीत किये थे। मान्यतानुसार श्रावस्ती की स्थापना पौराणिककालीन राजा श्रावस्त के द्वारा की गई थी। श्रावस्ती प्राचीन कोशल राज्य की राजधानी रही थी और यहाँ भगवान बुद्ध ने अपनी चमत्कारी शक्ति का प्रदर्शन किया था।

दर्शनीय स्थल : स्वर्णगन्ध कुटी, आनन्दबोधि वृक्ष, शोभनाथ मंदिर, अन्य स्तूप–विहार, पक्की कुटी, कच्ची कुटी आदि।

आवासीय सुविधा : पर्यटक आवास गृह, कटरा, श्रावस्ती।

कौशाम्बी

इलाहाबाद से लगभग 55 किमी. दूर स्थित कौशाम्बी का

बौद्ध महोत्सव के अन्तर्गत कौशाम्बी में आयोजित बौद्ध महोत्सव।

का भी निर्णय लिया गया है।

बौद्ध महोत्सव ने वस्तुतः विभिन्न देशों से विश्व–बन्धुत्व की भावना को और प्रगाढ़ता तो प्रदान की ही है, इसके माध्यम से उत्तर प्रदेश में स्थित सारनाथ, कुशीनगर, श्रावस्ती, संकिसा, कपिलवस्तु और कौशाम्बी जैसे महिमामण्डित बौद्ध पर्यटक स्थलों को विश्व के पर्यटन मानचित्र पर और विशिष्टता भी प्राप्त हुई है।

संकिसा में आयोजित बौद्ध महोत्सव।

उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध स्थल

कपिलवस्तु (पिपरहवा)

गोरखपुर नगर से लगभग 100 किमी. दूर, कभी शाक्यवंश की राजधानी एवं भारत के प्राचीन गणराज्यों में से एक रहे इस स्थान पर भगवान बुद्ध का राजकुमार सिद्धार्थ के रूप में बाल्यकाल व्यतीत हुआ था। उल्लेखनीय है कि विभिन्न उत्खननों के माध्यम से यह सिद्ध हो चुका है कि कपिलवस्तु उत्तर प्रदेश के सिद्धार्थनगर जनपद के अंतर्गत आने वाले पिपरहवा ग्राम में ही स्थित था।

दर्शनीय स्थल : स्तूप, गनवरिया स्थित अवशेष, सालारगढ़ पुरातात्विक स्थल।

आवासीय सुविधा : राही मोटेल (उ०प्र०रा०प०वि०निगम)।

सारनाथ

वाराणसी से 10 किमी. की दूरी पर स्थित सारनाथ में भगवान बुद्ध ने ज्ञान–प्राप्ति के उपरान्त लगभग 2500 वर्षों पूर्व प्रथम धर्मोपदेश दिया था।

दर्शनीय स्थल : धामेक स्तूप, चौखण्डी स्तूप, मूलगंधकुटी विहार, अशोक स्तम्भ, संग्रहालय।

आवासीय सुविधा : होटल मृगदाव, सारनाथ (उ०प्र०रा०प०वि०निगम)।
दूरभाष : 386965
वाराणसी में विभिन्न स्तर के होटल उपलब्ध हैं।

श्रावस्ती

यहाँ भगवान बुद्ध ने जेतवन में 24 वर्षाकाल व्यतीत किये थे। मान्यतानुसार श्रावस्ती की स्थापना पौराणिककालीन राजा श्रावस्त के द्वारा की गई थी। श्रावस्ती प्राचीन कोशल राज्य की राजधानी रही थी और यहाँ भगवान बुद्ध ने अपनी चमत्कारी शक्ति का प्रदर्शन किया था।

दर्शनीय स्थल : स्वर्णगन्ध कुटी, आनन्दबोधि वृक्ष, शोभनाथ मंदिर, अन्य स्तूप–विहार, पक्की कुटी, कच्ची कुटी आदि।

आवासीय सुविधा : पर्यटक आवास गृह, कटरा, श्रावस्ती।

कौशाम्बी

इलाहाबाद से लगभग 55 किमी. दूर स्थित कौशाम्बी का

भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त करने के बाद छठें व नवें वर्ष में भ्रमण किया था और यहां अनेक उपदेश दिये थे। प्राचीनकाल में कौशाम्बी वत्स जनपद की राजधानी थी और महाराज उदयन यहाँ के राजा थे।

दर्शनीय स्थल : प्राचीन दुर्ग, घोषिताराम मठ व अशोक स्तम्भ के अवशेष। कौशाम्बी के उत्खनन से प्राप्त दुर्लभ सामग्री इलाहाबाद के संग्रहालय में संग्रहीत है।

आवासीय सुविधा : निरीक्षण गृह, लोक निर्माण विभाग, कौशाम्बी। इलाहाबाद में विभिन्न प्रकार के होटल उपलब्ध हैं।

संकिसा

आगरा से लगभग 200 किमी. तथा फर्रुखाबाद से लगभग 50 किमी. दूर वर्तमान बसन्तपुर ग्राम में संकिसा स्थित है। यहाँ भगवान बुद्ध मान्यतानुसार स्वर्ग में अपनी माँ को धर्मोपदेश देने के बाद अवतरित हुए थे।

दर्शनीय स्थल : बिसारी देवी मंदिर, स्तूप, अशोक हाथी स्तम्भ, बुद्ध मंदिर आदि।

आवासीय सुविधा : निरीक्षण गृह, लो०नि०वि०, फतेहगढ़ (2 किमी.)

कुशीनगर

गोरखपुर से 51 किमी. दूर स्थित कुशीनगर में (प्राचीन नाम कुशीनारा जो मल्ल राजाओं की राजधानी थी और जिसकी गणना तत्कालीन सोलह जनपदों में की जाती थी) भगवान बुद्ध महापरिनिर्वाण प्राप्त कर जीवन–मरण के बन्धन से मुक्त हुए थे।

दर्शनीय स्थल : निर्वाण चैत्य, महापरिनिर्वाण मंदिर–जिसमें भगवान बुद्ध की लेटी हुई 6.10 मीटर लम्बी विशाल प्रतिमा दर्शनीय है। मुकुट बंधन चैत्य (रामाभर स्तूप), माथा कुंवर मंदिर, ध्यान उद्यान, इण्डो–जापान–श्रीलंका मंदिर, वाट थाई मंदिर, संग्रहालय, म्यानमार, कोरियन, चीनी मंदिर, जापानी स्तूप, बिड़ला हिन्दू–बौद्ध मंदिर, शिव मंदिर, रामजानकी मंदिर आदि।

आवासीय सुविधा : पथिक निवास (उ०प्र०रा०प०वि०नि०)
दूरभाष : 71038
होटल लोटस् निक्को। दूरभाष : 71139

बौद्ध स्थलों का पर्यटन–विकास

उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध तीर्थ स्थलों पर अधिकाधिक पर्यटक सुविधायें सुलभ कराने के उद्देश्य से पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा महत्वाकांक्षी **बौद्ध परिपथ योजना** के अन्तर्गत पर्यटन–विकास के कार्य करवाये जा रहे हैं।

बौद्ध परिपथ में त्वरित पर्यटन विकास एवं पर्यटन संभावनाओं के सर्वेक्षण हेतु पर्यटन विभाग द्वारा विशेष अध्ययन करवाये गये हैं/करवाये जा रहे हैं। ज्ञातव्य है कि नेशनल पार्क सर्विस, यू.एस.ए. द्वारा सारनाथ के पर्यटन विकास हेतु एक मास्टर–प्लान तैयार किया गया था जिसके आधार पर सारनाथ में आगन्तुक केन्द्र, मनन केन्द्र एवं चौखण्डी स्तूप के विकास की योजनायें कार्यान्वित की जा रही हैं।

इसी प्रकार ए.एफ. फरग्यूसन एण्ड कम्पनी द्वारा बौद्ध परिपथ के पर्यटन विकास के लिये एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार की गयी है जिसके आधार पर जापान सरकार (ओ.ई.सी.एफ.) द्वारा वर्ष–1988 में उत्तर प्रदेश एवं बिहार में बौद्ध परिपथ पर पर्यटक अवस्थापना सुविधाओं के सृजन हेतु एक परियोजना स्वीकृत की गयी थी जिसके अन्तर्गत प्रथम चरण में उत्तर प्रदेश में रु. 77.48 करोड की धनराशि से राजमार्गों का सुदृढीकरण/चौडीकरण, कुशीनगर एवं सारनाथ में लैण्डस्केपिंग तथा कुशीनगर में जलापूर्ति, सैनिटेशन एव विद्युतीकरण, गाजीपुर एवं दोहरीघाट में मार्गीय सुविधाओं के निर्माण के कार्य करवाये जा चुके हैं।

बौद्ध परिपथ के सर्वांगीण विकास से पर्यटकों को अधिकाधिक लाभान्वित कराने के उद्देश्य से बौद्ध परिपथ के पर्यटन–विकास के द्वितीय चरण की रु. 1020.60 करोड़ की योजना भारत सरकार को प्रेषित की गयी है। इस योजना के अन्तर्गत राजमार्गों का सुदृढ़ीकरण/चौड़ीकरण, सड़क मार्गों के दोनों ओर वृक्षारोपण, स्मारकों का संरक्षण, सारनाथ– कुशीनगर– कौशाम्बी– संकिसा–पिपरहवा में लैण्डस्केपिंग, कुशीनगर– पिपरहवा– श्रावस्ती– संकिसा– कौशाम्बी में आगन्तुक केन्द्र, कुशीनगर– पिपरहवा– श्रावस्ती– संकिसा– कौशाम्बी में मनन केन्द्र, पिपरहवा– श्रावस्ती– संकिसा– कौशाम्बी में संग्रहालय एवं कुशीनगर– पिपरहवा– श्रावस्ती– संकिसा– कौशाम्बी में स्तूप का निर्माण, सुचारु परिवहन, विद्युत, जल वितरण व्यवस्था, कपिलवस्तु में पर्यटक ग्राम का विकास तथा

दो स्थानों पर मार्गीय सुविधाओं का निर्माण प्रस्तावित है।

इसके अतिरिक्त पर्यटन उद्योग से सम्बंधित विभिन्न कंसल्टेंसी एजेन्सियों से सारनाथ, कुशीनगर, कपिलवस्तु (पिपरहवा) एवं श्रावस्ती की प्री–फिजिबिलिटी रिपोर्ट तैयार करवाये जाने के प्रस्तावों पर भी विचार किया जा रहा है। इसमें आगन्तुक केन्द्र, मनन केन्द्र, डियर पार्क, योग एवं आयुर्वेद केन्द्र, एवियरी तथा मूलभूत सुविधाओं के विकास पर सुझाव भी सम्मिलित होंगे।

वर्तमान में उत्तर प्रदेश में बौद्ध परिपथ के अंतर्गत सारनाथ में मनन केन्द्र, आगन्तुक केन्द्र, चौखण्डी स्तूप का विकास, स्मारकों पर प्रकाश व्यवस्था तथा सारंग मंदिर का पर्यटन विकास, कुशीनगर में संग्रहालय के अवशेष कार्य, मार्गीय सुविधा का निर्माण, कपिलवस्तु (पिपरहवा) में लैण्डस्केपिंग, सौंदर्यीकरण, विभिन्न बौद्ध देशों के धर्मावलम्बियों के लिए बौद्ध विहार के निर्माण हेतु 30 एकड़ भूमि की अध्याप्ति/फेंसिंग, श्रावस्ती में उद्यान की स्थापना/विकास, मार्गों व पुरातात्विक स्मारकों पर प्रकाश व्यवस्था तथा कौशाम्बी में आंतरिक मार्गों के सुधार के कार्य करवाये जा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के बौद्ध स्थलों पर भ्रमणार्थ आने वाले पर्यटकों की सुविधा हेतु पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा वाराणसी–कुशीनगर–सुनौली–लुम्बिनी–कपिलवस्तु–बलरामपुर–श्रावस्ती–इलाहाबाद–कौशाम्बी–सारनाथ स्थानों के लिए एक पैकेज तैयार किया गया है जिसे शीघ्र ही संचालित कराया जायेगा।

उत्तर प्रदेश में सांस्कृतिक पर्यटन को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से पर्यटन विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रदेश के विभिन्न प्रमुख स्थानों पर प्रतिवर्ष नियमितरूप से उत्सवों/गतिविधियों के आयोजन करवाये जाते हैं ताकि इनके माध्यम से पर्यटकों को मनोरंजन के साथ–साथ इन स्थानों की विशिष्ट सांस्कृतिक–ऐतिहासिक परम्पराओं से भी परिचित कराया जा सके। इस क्रम में सारनाथ में प्रतिवर्ष बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बुद्ध–महोत्सव का आयोजन कराया जाता है।

इस प्रकार यह स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है कि भगवान बुद्ध ने उत्तर प्रदेश के विभिन्न स्थानों का भ्रमण कर न केवल उन्हें अपनी चरणरज से पावन ही बनाया अपितु देशाटन के माध्यम से विभिन्न विचारधाराओं और संस्कृतियों को अपनी उपयोगी शिक्षाओं के द्वारा एकता के सूत्र में भी पिरोया।

वस्तुतः ये प्रेरणादायी स्थान वर्ष–पर्यन्त बड़ी संख्या में आने वाले भारतीय और विभिन्न देशों के पर्यटकों के कारण विश्व–बंधुत्व की भावना का व्यापक स्तर पर प्रचार–प्रसार भी कर रहे हैं।

उत्तर प्रदेश में स्थित बौद्ध स्थलों पर पर्यटक आवागमन : एक दृष्टि में

	स्थान का नाम	वर्ष	भारतीय पर्यटक	विदेशी पर्यटक	योग
1.	कुशीनगर	1996	565315	16542	581857
		1997	616315	14688	631003
		1998	616931	14410	621341
2.	सारनाथ	1996–97	159847	87084	246931
		1997–98	174106	81024	255130
	नवम्बर, 98 तक	1998–99	211445	49530	260975
3.	श्रावस्ती	1996–97	20450	14532	34982
		1997–98	22400	15200	37600
	दिसम्बर, 98 तक	1998–99	18900	12300	31200
4.	कपिलवस्तु (पिपरहवा)	1996	437	4936	5373
		1997	1704	12049	13753
		1998	1002	3533	4535
5.	कौशाम्बी	1996–97	27,700	700	27700
		1997–98	30,567	1236	31803
		1998–99	36,486	1845	38331
6.	संकिसा	1996–97	400	2300	2700
		1997–98	600	2600	3200
		1998–99	350	2800	3150

महत्वपूर्ण सम्पर्क–सूत्र

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
माननीय श्री कलराज मिश्र पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	272830 221553
माननीय श्री दलवीर सिंह पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	208561
श्री रुद्र सिंह पाण्डा अध्यक्ष कुमाऊँ मण्डल विकास निगम, नैनीताल	35159	36073 35400
डॉ. देवेन्द्र भसीन, अध्यक्ष गढ़वाल मण्डल विकास निगम, देहरादून	653420	651075
श्री रवीन्द्र सिंह सचिव एवं महानिदेशक पर्यटन	211319	208792
डॉ. दिनेश शर्मा उपाध्यक्ष, उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225165	265870 325483
श्री यू०के०एस० चौहान निदेशक पर्यटन एवं प्रबन्ध निदेशक उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225252	208547
श्री आनन्द प्रकाश उपाध्याय उप सचिव, पर्यटन, उ०प्र० शासन	CH 3019	462227
श्री कैलाशचन्द्र मिश्र प्रधान निजी सचिव, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	385424
श्री विजय बहादुर पाठक जन सम्पर्क अधिकारी, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	202130

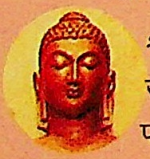

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
श्री ज़ियाउद्दीन मंसूरी निजी सचिव, पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	213243
श्री पी.सी. शर्मा निदेशक पर्यटन (पर्वतीय), देहरादून	627405 624147	683721
श्री उमेश सिन्हा प्रबन्ध निदेशक, कु.म.वि. निगम, नैनीताल	36209	36097
श्री हरिश्चन्द्र जोशी प्रबन्ध निदेशक, ग.म.वि. निगम, देहरादून	744408	684085 684055
श्री एस.पी. सिंह अधिशासी निदेशक, उ.प्र.रा.प.वि. निगम, लखनऊ	228349 225165	221687
श्रीमती नीती साह संयुक्त निदेशक, पर्यटन, लखनऊ	225555	378362
श्री राजेन्द्र प्रसाद सहायक निदेशक	213632	
श्री पी.के. सिंह सहायक निदेशक	213632	388225
श्री राम पलटन सहायक निदेशक	228349	
श्री रामकृष्ण सहायक निदेशक	228349	
सुश्री प्रीति श्रीवास्तव प्रचार अधिकारी	213632	

क्षेत्रीय अधिकारी (मैदानी क्षेत्र)

संयुक्त निदेशक, पर्यटक कार्यालय, आगरा	360517	332148
उप निदेशक, पर्यटक कार्यालय, झाँसी	441267	
मुख्य सम्पर्क अधिकारी, पर्यटक कार्यालय, मेरठ	2473567	

महत्वपूर्ण सम्पर्क–सूत्र

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
माननीय श्री कलराज मिश्र पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	272830 221553
माननीय श्री दलवीर सिंह पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	208561
श्री रुद्र सिंह पाण्डा अध्यक्ष कुमाऊँ मण्डल विकास निगम, नैनीताल	35159	36073 35400
डॉ. देवेन्द्र भसीन, अध्यक्ष गढ़वाल मण्डल विकास निगम, देहरादून	653420	651075
श्री रवीन्द्र सिंह सचिव एवं महानिदेशक पर्यटन	211319	208792
डॉ. दिनेश शर्मा उपाध्यक्ष, उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225165	265870 325483
श्री यू०के०एस० चौहान निदेशक पर्यटन एवं प्रबन्ध निदेशक उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225252	208547
श्री आनन्द प्रकाश उपाध्याय उप सचिव, पर्यटन, उ०प्र० शासन	CH 3019	462227
श्री कैलाशचन्द्र मिश्र प्रधान निजी सचिव, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	385424
श्री विजय बहादुर पाठक जन सम्पर्क अधिकारी, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	202130

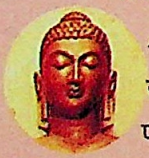

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
श्री ज़ियाउद्दीन मंसूरी निजी सचिव, पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	213243
श्री पी.सी. शर्मा निदेशक पर्यटन (पर्वतीय), देहरादून	627405 624147	683721
श्री उमेश सिन्हा प्रबन्ध निदेशक, कु.म.वि. निगम, नैनीताल	36209	36097
श्री हरिश्चन्द्र जोशी प्रबन्ध निदेशक, ग.म.वि. निगम, देहरादून	744408	684085 684055
श्री एस.पी. सिंह अधिशासी निदेशक, उ.प्र.रा.प.वि. निगम, लखनऊ	228349 225165	221687
श्रीमती नीती साह संयुक्त निदेशक, पर्यटन, लखनऊ	225555	378362
श्री राजेन्द्र प्रसाद सहायक निदेशक	213632	
श्री पी.के. सिंह सहायक निदेशक	213632	388225
श्री राम पलटन सहायक निदेशक	228349	
श्री रामकृष्ण सहायक निदेशक	228349	
सुश्री प्रीति श्रीवास्तव प्रचार अधिकारी	213632	

क्षेत्रीय अधिकारी (मैदानी क्षेत्र)

संयुक्त निदेशक, पर्यटक कार्यालय, आगरा	360517	332148
उप निदेशक, पर्यटक कार्यालय, झाँसी	441267	
मुख्य सम्पर्क अधिकारी, पर्यटक कार्यालय, मेरठ	2473567	

महत्वपूर्ण सम्पर्क–सूत्र

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
माननीय श्री कलराज मिश्र पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	272830 221553
माननीय श्री दलवीर सिंह पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	208561
श्री रुद्र सिंह पाण्डा अध्यक्ष कुमाऊँ मण्डल विकास निगम, नैनीताल	35159	36073 35400
डॉ. देवेन्द्र भसीन, अध्यक्ष गढ़वाल मण्डल विकास निगम, देहरादून	653420	651075
श्री रवीन्द्र सिंह सचिव एवं महानिदेशक पर्यटन	211319	208792
डॉ. दिनेश शर्मा उपाध्यक्ष, उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225165	265870 325483
श्री यू०के०एस० चौहान निदेशक पर्यटन एवं प्रबन्ध निदेशक उ०प्र० राज्य पर्यटन विकास निगम, लखनऊ	225252	208547
श्री आनन्द प्रकाश उपाध्याय उप सचिव, पर्यटन, उ०प्र० शासन	CH 3019	462227
श्री कैलाशचन्द्र मिश्र प्रधान निजी सचिव, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	385424
श्री विजय बहादुर पाठक जन सम्पर्क अधिकारी, पर्यटन एवं लोक निर्माण मंत्री, उ०प्र०	238336 238087 CH 3303	202130

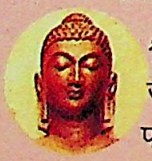

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
श्री ज़ियाउद्दीन मंसूरी निजी सचिव, पर्यटन राज्य मंत्री, उ०प्र०	238116 CH 3314	213243
श्री पी.सी. शर्मा निदेशक पर्यटन (पर्वतीय), देहरादून	627405 624147	683721
श्री उमेश सिन्हा प्रबन्ध निदेशक, कु.म.वि. निगम, नैनीताल	36209	36097
श्री हरिश्चन्द्र जोशी प्रबन्ध निदेशक, ग.म.वि. निगम, देहरादून	744408	684085 684055
श्री एस.पी. सिंह अधिशासी निदेशक, उ.प्र.रा.प.वि. निगम, लखनऊ	228349 225165	221687
श्रीमती नीती साह संयुक्त निदेशक, पर्यटन, लखनऊ	225555	378362
श्री राजेन्द्र प्रसाद सहायक निदेशक	213632	
श्री पी.के. सिंह सहायक निदेशक	213632	388225
श्री राम पलटन सहायक निदेशक	228349	
श्री रामकृष्ण सहायक निदेशक	228349	
सुश्री प्रीति श्रीवास्तव प्रचार अधिकारी	213632	

क्षेत्रीय अधिकारी (मैदानी क्षेत्र)

संयुक्त निदेशक, पर्यटक कार्यालय, आगरा	360517	332148
उप निदेशक, पर्यटक कार्यालय, झाँसी	441267	
मुख्य सम्पर्क अधिकारी, पर्यटक कार्यालय, मेरठ	2473567	

	दूरभाष	
	कार्यालय	आवास
सहायक निदेशक पर्यटक कार्यालय, हरिद्वार	427370	
सहायक निदेशक पर्यटक कार्यालय, गोरखपुर	335450	336893
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, लखनऊ	226205	
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, इलाहाबाद	601873	
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, वाराणसी	341162	340294
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, फैजाबाद	823214	
पर्यटक अधिकारी, पर्यटक कार्यालय, नई दिल्ली	3322251	5490624
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, मुम्बई	2155082	
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, चण्डीगढ़	707649	
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, चेन्नई	8283276	
पर्यटक अधिकारी कार्यालय, अहमदाबाद	6560752	
पर्यटक अधिकारी कार्यालय, कलकत्ता	2207855	

क्षेत्रीय अधिकारी (पर्वतीय क्षेत्र)

श्री ए.के. द्विवेदी उप निदेशक (पर्वतीय क्षेत्र), देहरादून	624147	621450
श्री ए.के. सिंह उप निदेशक, देहरादून	624147	
श्री किशनबीर उप निदेशक; नैनीताल	35337	35765
श्री चन्द्रसेन सहायक निदेशक, देहरादून	653217	
सहायक निदेशक पर्यटक कार्यालय, मसूरी	632863	
श्रीमती आभा भट्ट क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, अल्मोड़ा	30180	
क्षेत्रीय पर्यटक अधिकारी कार्यालय, पौड़ी	22241	

•••

उत्तर प्रदेश
बौद्ध परिपथ
दिल्ली
संकिसा
श्रावस्ती
कपिलवस्तु
(पिपरहवा)
लखनऊ
कुशीनगर
गोरखपुर
कौशाम्बी
इलाहाबाद
सारनाथ
वाराणसी

कुशीनगर

● आगामी आकर्षण

कुशीनगर में बुद्ध महोत्सव दिनांक 26 अप्रैल से 30 अप्रैल, 1999 तक।

उत्तर प्रदेश

3, नवल किशोर मार्ग, लखनऊ (उ.प्र.) भारत।

फोन : (0522) 228349, 225165, फैक्स : (0522)221776

Internet : http://www.up-tourism.com

E-mail address : upstdc@lw1.vsnl.net.in

स्वरूप-संयोजन एवं प्रस्तुतीकरण : प्रकाश पैकेजर्स, 257-गोलागंज, लखनऊ - 18

मुद्रित 3,000 / फरवरी, 99